हथेली के आईने में

रमेश मराठा

रमेश मराठा आकाशवाणी कठुआ में वरिष्ठ उद्घोषक के पद पर कार्यरत हैं। उनका रेडियो पर बोलने का अंदाज़ ही कुछ ऐसा है कि साधारण शब्द भी उनकी ज़ुबान से कविता के झरने की तरह झरते हुए प्रतीत होते हैं। उनके प्रथम काव्य संग्रह 'हथेली के आईने में' की कविताएँ भी पहाड़ी नदी की भांति उछलती-कूदती अपना रास्ता आप तलाश करती, अपने गंतव्य की ओर खुद-ब-खुद बढ़ती जाती हैं। इन कविताओं का सबसे विशिष्ट व खूबसूरत पहलू है कुदरती परिवेश। कविताओं में सहज-सरल भावनाओं को प्राकृतिक प्रतीकों, बिम्बों व अलंकारों से सजाया गया है जो पाठक को आत्म विभोर कर जाते हैं।

'हथेली के आईने में' की अधिकांश कविताओं का प्रमुख विषय प्रेम है। बिछड़े साथी की तलाश है। उसका इन्तज़ार है, संग-संग बिताए पलों की स्मृतियाँ हैं। अधूरे ख्वाब हैं, सिसकती-तड़पती हसरतें हैं। संवाद है, बार-बार मान जाने, चले जाने की पुकार है। अपनी आत्मानुभूति एवं सूक्ष्म जज़्बात को प्रकट करने के लिए जिन मौलिक प्रतीकों का प्रयोग कवि ने किया है, वे अनूठे हैं और उन्होंने कविताओं को नयापन एवं ताज़गी बख्शी है। जो कई बार दोहराये जाने के बावजूद भी अखरते नहीं।

- धर्मपाल साहिल

ISBN : 978-81-7408-457-6

Book gifted to me by Ramesh ji on 26th Sep. 2019

at his residence in Jammu. Could't resist reading it the same day. The wonderful review written by Mr. Dharam Paul Sahil made me much inquisitive to go through all the poems. ~~to~~ ~~the~~ While going through the Do Shabd (P.5) an important question started haunting me. ~~This collection of poems being~~. As I went on reading the contents in the book, ~~all my~~ the ~~answers of~~ all my queries started getting clarified.. One of the important questions that haunted me was that the author has produced this book in Hindi but a number of Urdu words were found ~~while~~ in it.

हथेली के आईने में

(रमेश मराठा की काव्य रचनाएँ)

हथेली के आईने में

रमेश मराठा

अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली

ISBN : 978-81-7408-457-6

अयन प्रकाशन

1/20, महरौली, नई दिल्ली - 110 030

दूरभाष : 2664 5812

e-mail : ayanprakashan@rediffmail.com

•

मूल्य : 160.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2011 © रमेश मराठा

HATHELI KE AAINE MEIN (Poetry) by Ramesh Marhatha

मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110093

दो शब्द

कुछ रिश्ते पैदाइशी होते हैं, कुछ कच्चे धागों के, कुछ रिश्ते जाने-अनजाने होते हैं। मेरा आप सबसे जो रिश्ता है, वो आवाज़ का है, आवाज़ के माध्यम से आप सभी से एक अपनेपन का रिश्ता बन गया है। वैसे तो मैं कश्मीर का बाशिन्दा हूँ! और सरकारी नौकरी (आकाशवाणी कठुआ में वरिष्ठ उद्घोषक के पद पर कार्यरत) के सिलसिले में मुझे कश्मीर से कठुआ की सरज़मीं पर आना पड़ा। पर यहाँ के लोगों ने मुझे इतना प्यार दिया कि मैं यहीं का हो गया। लेकिन अब भी जब कभी मैं अपनी आँखें बंद करता हूँ तो खुदा की बनाई सबसे खूबसूरत क़ायनात यानी कश्मीर की हसीन वादियाँ, बर्फीली हवाएँ, इत्र में डूबी फ़िज़ा, चिनार के ख़ामोश दरख़्त मेरी रूह में समा जाते हैं। वहाँ गुज़ारा इक इक पल एक नक्शे की तरह मेरे ज़ेह्न के कैनवास में उभरता और सिमटता चला जाता है। उन सभी यादों को कभी अल्फाज़ का लबादा पहनाने की कोशिश करता हूँ तो कभी आवाज़ के माध्यम से सबसे साँझा करता हूँ। आप सभी चाहने वालों के आग्रह पर अपने अल्फाज़ को 'हथेली के आईने में' समेटा है। मैं अपने आप को कोई शायर या कवि तसलीम नहीं करता। मेरे अल्फाज़ मेरे और मेरी रूह के हैं। या यूँ कह लीजिए कि एक आम आदमी के हैं जो खुद से खुद की बात कहता है और ख़ामोश हो जाता है। मैं अपने चाहने वालों का दिल से शुक्रगुज़ार हूँ और अपनी माँ श्रीमती रूपावती जी का भी जिनके

आशीर्वाद से 'हथेली के आईने में' आप तक पहुँचने में सक्षम हुआ। उम्मीद करता हूँ, दिल से कही मेरी बातें, दिलों तक पहुँचें।

- रमेश मराठा
वरिष्ट उद्घोषक
आकाशवाणी कठुआ
जम्मू कश्मीर
मो. : 9419245577

'हथेली के आईने में' शायद मुकम्मल न हो पाती अगर श्रीमती सुधा शर्मा इस किताब को तरतीब देने में मेरी मदद न करतीं। मुझे इन नज़्मों को किताब की शक्ल देने में श्रीमती सुधा शर्मा ने प्रेरित किया। मैं हमेशा इनका आभारी रहूँगा।

इसके अलावा आकाशवाणी कठुआ में अस्थायी उद्घोषिका सुश्री विजयता राजपूत का भी आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने मुझे हमेशा इसके लिए प्रोत्साहित किया।

इस 'हथेली के आईने में' के ज़रिए मेरे गुरु श्री प्राण चन्द्रा जी को मेरा शत-शत नमन, जिन्होंने हर कदम पर मेरा मार्गदर्शन किया। इसके अलावा मेरे सहकर्मी और मेरे तमाम चाहने वालों का मैं हमेशा आभारी रहूँगा, जिन्होंने मुझे इतना स्नेह दिया।
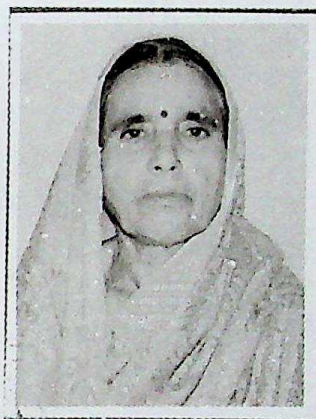
प्रातःस्मरणीया, परम आदरणीया,
परम पूजनीया एवं मेरी सच्ची मार्गदर्शक
वन्दनीया माता जी
श्रीमती रूपावती जी
के चरणों में
सप्रेम भेंट

रमेश मराठा : प्राकृतिक सौन्दर्य का शायर

रमेश मराठा शायरी की दुनिया का एक ख़ूबसूरत नाम है। मराठा जी का तआल्लुक़ आकाशवाणी कठुआ (जे. एंड के.) से है और जो लोग आकाशवाणी कठुआ के प्रोग्राम सुनते हैं उनके कान मराठा जी के नाम, उनके काम और उनकी आवाज़ से बख़ूबी आशना हैं। कुछ साल पहले उन्होंने आकाशवाणी कठुआ से एक प्रोग्राम 'यादें बन गईं गीत' के प्यारे नाम से शुरू किया था। इस प्रोग्राम की शोहरतें हर चहार तरफ़ फैल गयी हैं और हज़ारों, लाखों श्रोता इस प्रोग्राम से आबद्ध हो गये हैं। मराठा जी की आवाज़ एक चलता हुआ जादू है, उनकी आवाज़ में वो कशिश है कि जो कोई सुनता है वह मराठा जी का प्रशंसक हो जाता है।

रमेश मराठा जी कश्मीरी हैं - फूल की भांति सुन्दर और खिले हुए। उनकी शायरी का तआल्लुक़ कश्मीर के प्राकृतिक दृश्यों से है - बर्फ़ से ढके हुए पहाड़ों की आकाश को छूती हुई चोटियाँ, तेज़ रफ़्तार नदियाँ, बरसात में भीगे हुए सरसब्ज़ पेड़ों के साये, साँस लेती हुई ज़िन्दा जावेद सुब्हें, हाथों में हज़ार आईने लिये हुए साफ़-शफ़्फ़ाफ़ झरने, रंग-बिरंगे पंछियों के मनमोहक चहचहे, इत्र में डूबी हुई हवाएँ, शामों के झुटपुटे और घरों को लौटते हुए पंछियों की लम्बी-लम्बी क़तारें, फूलों से लदी हुई हसीन वादियाँ, पत्थरों से सर फोड़ते हुए पुर-शोर पहाड़ी नदी-नाले, मन को मोह लेने वाले प्राकृतिक दृश्य और दूर किसी चरवाहे की बाँसुरी से निकलती हुई दर्द भरी लय से गूँजती हुई घाटियाँ रमेश मराठा की शायरी के लिए मवाद फ़राहम करती हैं। कठुआ में होते हुए भी वह महसूस करते हैं कि वह किसी चिनार के साये में बैठ कर शायरी कर रहे हैं।

वह शायरी क्या जिसमें महबूब का ज़िक्र न हो। मराठा जी भी किसी

हक़ीक़ी या काल्पनिक महबूबा की याद में कभी-कभी कविता कहते हैं। मराठा जी ने मेरी एक नज़्म-

तेरे खुशबू में बसे ख़त मैं जलाता कैसे
तेरे ख़त आज मैं गंगा में बहा आया हूँ

को अपनी सुन्दर आवाज़ में रिकार्ड कराया है और वह सी.डी. सुनने से तआल्लुक़ रखती है।

खुदा करे पुस्तक रूप में मराठा जी की शायरी दूर-दूर तक शुहरतों औश्र नेकनामियों की बस्तियाँ क़ाइम करे! आमीन!!

- राजेन्द्र नाथ 'रहबर'

(शिरोमणि उर्दू साहित्यकार, पंजाब सरकार)
1085 सराय मुहल्ला
पठानकोठ (पंजाब) 145001
फोन : 0186-2227522
मो. : 9417067191

Wonderfully crafted review. Beautiful similes relevant. Dullis has been depicted as heartthrob of the masses mainly because of his smoky & highly modulated voice.

प्रेम के इन्द्रधनुषी रंग बिखरे हैं 'हथेली के आईने में'

कविता वेगमयी भावनाओं का सहज एवं स्वाभाविक प्रवाह होता है। मनुष्य के भीतर के अनकहे अनुभवों को शब्दों का लिबास पहनाया जाता है। कविता मानवीय संवेदनाओं व सरोकारों से जुड़ने का साधन भी होती है। कुछ कविताएँ सृजित होती हैं तो कुछ 'क्राफ्ट' की जाती हैं। सृजित कविताएँ कवि के हृदय से निकल कर सीधे पाठक के हृदय में उतर कर उसकी रूह से रिश्ता जोड़ने की कोशिश करती हैं, जबकि 'क्राफ्ट' की गयी कविता में बौद्धिकता का अंश ज्यादा मात्रा में होता है और वह पाठक की बौद्धिक सन्तुष्टि तो करा सकती है, पर आत्मिक सन्तुष्टि पूर्णतया कराने में सक्षम नहीं होती।

रमेश मराठा आकाशवाणी कठुआ में वरिष्ठ उद्घोषक के पद पर कार्यरत हैं। उनका रेडियो पर बोलने का अंदाज़ ही कुछ ऐसा है कि साधारण शब्द भी उनकी जुबान से कविता के झरने की तरह झरते हुए प्रतीत होते हैं। उनके प्रथम काव्य संग्रह 'हथेली के आईने में' की कविताएँ भी पहाड़ी नदी की भांति उछलती-कूदती अपना रास्ता आप तलाश करती, अपने गंतव्य की ओर खुद-ब-खुद बढ़ती जाती हैं। इन कविताओं का सबसे विशिष्ट व खूबसूरत पहलू है कुदरती परिवेश। कविताओं में सहज-सरल भावनाओं को प्राकृतिक प्रतीकों, बिम्बों व अलंकारों से सजाया गया है जो पाठक को आत्म विभोर कर जाते हैं।

'हथेली के आईने में' की अधिकांश कविताओं का प्रमुख विषय प्रेम है। बिछड़े साथी की तलाश है। उसका इन्तज़ार है, संग-संग बिताए पलों की स्मृतियाँ हैं। अधूरे ख्वाब हैं, सिसकती-तड़पती हसरतें हैं। संवाद है, बार-बार मान जाने, चले जाने की पुकार है। अपनी आत्मानुभूति एवं सूक्ष्म जज़्बात को

प्रकट करने के लिए जिन मौलिक प्रतीकों का प्रयोग कवि ने किया है, वे अनूठे हैं और उन्होंने कविताओं को नयापन एवं ताज़गी बख्शी है। जो कई बार दोहराये जाने के बावजूद भी अखरते नहीं।

इस संग्रह की कविताओं में प्रेम के इन्द्रधनुषी रंग बिखरे हुए हैं। कुदरत की खूबसूरती की छटा देखते ही बनती है -

'जैसे लौटता है
मखमली मौसम
और हरा होता है जंगल
.... जैसे बुलबुल
शबनमी बूँदों से नहा रही हो।
जैसे खामोश वादी में
फरिश्तों की बारात आई हो....'

मिलना-बिछड़ना ज़िंदगी के दो अहम् अंग हैं। बिछड़े साथी को न भुला पाने की पीड़ा और दरम्यां आए फ़ासलों की टीस कुछ यूँ उभरती है -

'तुम्हारी मासूम बेबस
अदाओं का अहसास
कैसे भुला पाऊँगा
जबकि हमारे रिश्ते अब
पिंजरों में कैद हैं
....फिर भी इन रिश्तों की खुशबू
हमारे दरम्यां आए फासलों को
कम करने में
हमेशा मदद करती रही है।'

तन्हाई के आलम में, दिल की बेकरारी को लफ्ज़ों का पैरहन पहनाते हुए कवि रमेश कहते हैं -

'तुम्हारी हथेली में अपना अक्स ढूँढ़ लूँ
ताकि अपनी बिखरी सूरत संवार सकूँ....'

इसी प्रकार मन के मौन से उसके तसव्वुर में होती गुफ्तगू का अंदाज़ भी देखिए -

'कोई बात चले
तुम्हारे ख्वाबों की
तुम्हारी इबादत की
वो बारिशों में भीगने की....
उदासी भरे इन पीले पत्तों के मौसम में
सिर्फ तुम्हारी यादें
साये की तरह मेरे साथ-साथ हैं...."

उपरोक्त कोमल अनुभूतियों के साथ-साथ कवि वादी की बदली हुई फज़ा और उसमें घुली दहशत से भी वाबस्ता है। वादी के दहशतज़दा मौसम का चित्रण कवि ने कुछ यूँ लिखा है -

"इन झीलों के सीने में
खंजर तैरते देखे हैं
और हमने खून उबलते देखा है
पानी में कश्तियाँ डूबी हुई हैं
मल्लाहों को किनारां पे रोते हुए देखा है....'

कवि को धरती का बंटवारा नहीं भाता। ज़मीन पर बनाई सरहदें उसे ग़वारा नहीं हैं। वह तो समूची कायनात को एक देखने का चाहवान है। बंटवारा ज़मीन का हो या दिलों का, उसे नाग़वार गुज़रता है। इस बंटवारे का दर्द उनकी कविताओं - 'पंछी उस पार के' तथा 'सरहदों के आर-पार' में बहुत शिद्दत के साथ उभरा है -

"बेशक
अब ये सरहदें बाँटती हैं इन्सानों को
पर जज़्बात का बँटवारा
फिर भी न हो सका....'

'हथेली के आईने में' में कवि मन की अतृप्ति तथा जन्मों की प्यास बसी है तथा उस सागर की तलाश है, जो उसकी इस आत्मिक प्यास को बुझा दे। इस संग्रह की कविताएँ किसी वाद-विवाद एवं विशिष्ट लहर से मुक्त हैं। संयमित एवं सटीक शब्द चयन तथा उर्दू की चाशनी में डूबी रमेश मराठा की कविताएँ जहाँ ज़ज़्बातों की रवानगी व पुख्तगी से लबरेज़ हैं, वहीं उनके

ख़यालों को उन्मुक्त उड़ान के साथ-साथ नज़ाकत व नफासत भी हासिल हुई है।

कवि ने आत्मानुभूति तथा सूक्ष्म भावनाओं को प्रकट करने के लिए जिन मौलिक प्रतीकों का प्रयोग किया है वे कविता के ख़ज़ाने में अनमोल मोती साबित होंगे। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं -

मखमली मौसम, फरिश्तों की बारात, विरानी के पत्थर, सुरमई उजाले, हथेली में अक्स, मखमली आँचल, मखमली ज़मीन, पीले पत्तों के मौसम, सिरफिरे मौसम, हथेली के आईने में, पत्थरों के साये, रोशन लम्हे, लम्हों की फरियाद, शबनमी बूँदें, खुशबुओं के मेले, परछाइयों का कारवाँ, अतीत का मौसम - आदि आदि।

ये खूबियाँ कवि रमेश मराठा की कविता को आज के दौर के कवियों तथा कविता से अलग पहचान दिलाने में सक्षम हैं। ये कविताएँ हरेक वर्ग के पाठक को पसन्द आएँगी तथा उनकी संवेदनाओं को जगाएँगी, उनके जज़्बात को ऊर्जा प्रदान करेंगी - ऐसा मेरा विश्वास है। अपनी प्रथम खूबसूरत कृति के लिए कवि रमेश मराठा मुबारकबाद के हकदार हैं। उनकी लम्बी एवं सफल ज़िन्दगी तथा काव्य-संग्रह 'हथेली के आईने में' हेतु तारों जितनी शुभकामनाएँ।

शुभेच्छु,

धर्मपाल साहिल
(राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित)
पंचवटी, एकता एन्कलेव, लेन 02,
निकट साधु आश्रम, होशियारपुर (पंजाब)
फोन : 09876156964 एवं 09888369363

Collection of Poems have been very keenly analysed and transformed into words. I think this no other review could do justice to the collection of poem as Mr. Salove has given.

कवितानुक्रम

Masterpiece [illegible] words like JESE (AS) or VESE HI (LIKE) have been wonderfully used to make similes very powerful & attractive.

मख़मली मौसम

जैसे लौटता है
कोई मख़मली मौसम
और हरा होता है जंगल
वैसे ही
जैसे पूनम का चाँद
आकाश से उतर आया हो
जैसे बुलबुल
शबनमी बूँदों में नहा रही हो
जैसे इस
ख़ामोश वादी में
फ़रिश्तों की बारात आई हो
जैसे इस विरानी के पत्थर आज
कुछ-कुछ कहना चाह रहे हैं
जैसे यहाँ
ये पागल हवाएँ
अपनी फ़रियाद लिए
खुद से मुख़ातिब हैं
वैसे ही जब-जब
दिल हमारा धड़कता है
तुम्हें याद करते हैं। ❑

Poet seems to have some sad moments at his backdrop

रिश्तों की ख़ुशबू

और मैं चलता रहा
उस मोड़ तक
जहाँ तुम मुझे तन्हा छोड़ आए थे
ग़रचे यह सफ़र आज भी मुझे
मेरे हर उस बीते लम्हे को
भुलाने का हौसला देता है
मगर तुम्हारी मासूम बेबस
अदाओं का अहसास
कैसे भुला पाऊँगा
जबकि हमारे रिश्ते
अब पिंजरों में कैद हैं
फिर भी उन रिश्तों की ख़ुशबू
हमारे दरम्यां के फ़ासलों को
कम करने में
हमेशा मदद करती रही है। ❑

उम्मीदों के चिराग़

आज की शब
क्यों न लड़खड़ाएँ
इन अंधेरों में
मैं तुम्हें सम्भाल लूँ
और तुम मुझे सम्भाल लेना

चलें हम साथ-साथ
उम्मीदों के चिराग़ रौशन करें
ताकि एक नई सुनहरी सुबह हमें
अपनी बाहों में समेट ले

भूल जाएँ बीते मौसम को
यादों को
जब तुम तन्हा थी
और मैं भटकता मुसाफ़िर
क्यों न इस मौसम में याद करें
ढलती शामों को
सुरमई उजालों को
रात की नरम मिज़ाजी को

तुम्हारी मासूम अदाओं को

इस सफ़र में
फिर से साथ-साथ लड़खड़ाएँ
और दूर तक चलें
सम्भलते सम्भलते। ❑

~~Poet seems to~~ A deep ~~of~~ Imagination of ~~be~~
Poet is seen in this couplet
~~The~~ Poet is consious about
what he has lost but still
dont let his ~~things~~ virtue
imagination go away from his life.
There lies the beauty of our
poem.

ख़ामोश पानी

आओ!
तुम्हारे और मेरे दरम्यां
इन फ़ासलों को
नज़दीकियों में तबदील करने की कोशिश करें
फिर से इस ख़ामोश पानी में
पत्थर फेंकें
ताकि इन लहरों का मिलन
साहिलों से हो

आओ!
इन बादलों को
अपनी मुट्ठी में कैद करें
और फिर से पहले की ही तरह
बारिश में भीग जाएँ
मैं तुम्हारी हथेली में
अपना अक्स ढूँढ़ लूँ
ताकि अपनी बिखरी सूरत
संवार सकूँ

आओ! हम दोनों आज यह अहद करें
कि नहीं बिछड़ेंगे फिर से कभी
और तुम्हारे मेरे दरम्यां
इन फ़ासलों को हमेशा-हमेशा के लिए
अलविदा कह दें। ❑

आओ! चलें

आओ! चलें दूर तक
ढूँढ़ें मील के पत्थर को
और फिर छू लें उसे
मैं तुम्हारे कदमों को नाप लूँ
अपनी अगुंलियों से
कुछ फ़ासले रहने दूँ
शायद ये फ़ासले बनें
तुम्हारे करीब आने को
ताकि मैं इन्हें अपना कर
आने वाले कल के सपनों को
साकार कर सकूँ
तुम्हारा आँचल मख़मली
उम्मीदों से भर दूँ

आओ! चलें दूर तक
जहां तक
जहां तक ज़मीन और आसमां का
मिलन हो
अपनी तमन्नाओं के साथ। ❑

Very well conceived. Poet is sure that his beloved is far away from him. The poet tries to look at even the separation very positive. Poet is capable enough to remain happy during his separation even.

रूह का सफ़र

शायद वो मेरा साया था
सहमा-सहमा
पर बेवजह परेशान
यूँ ही बिखरा-बिखरा
अपने अतीत को याद करता
अपनी परछाई से
कई बार सवाल करता
रूहों के सफ़र के रहस्य को
जानने की कोशिश करता

वक्त से पहले
जो लोग चले जाते हैं
उनके अपनों के दुःख में शामिल होना
कुछ अहसासात
कुछ ऐसे जज़्बात जो
मेरे साये को घेर लेते हैं
जकड़ लेते हैं
और नोच लेते हैं बेवजह। ❑

तुम्हारे लौटने तक

मुख़्तसर सी मुलाक़ात थी तो ज़रूर
पर सफ़र सदियों का हमने तय किया
इसी उम्मीद से
कि दौरान-ए-सफ़र हमारी मुलाक़ातें
माज़ी के रिश्तों की
पहचान को बरक़रार रखने में
हमारी मदद कर सकें

कहीं तुम भटक न जाना
क्योंकि तुम्हारे अब के सफ़र की शुरूआत
टेढ़े मेढ़े रास्तों से होगी
तुम्हें मंज़िल तक पहुँचने के लिए
इन कच्ची पगडंडियों से गुज़रना होगा
और अपनी मुस्कुराहट को रोकना होगा
क्योंकि इन रास्तों से गुज़रने वाला
हर शख़्स ग़मज़दा है
मायूस है

मैं यह भी जानता हूँ

ये तुम्हारे पैरों के निशान
कब तक इस रेतीली ज़मीन पर
महफूज़ रह सकते हैं

इन पागल हवाओं में
तुम्हारे नीले रंग का दुपट्टा
सरक तो जाएगा तुम्हारे बदन से
ये तुम्हारे बालों की खुशबू
क्या मैं अब महसूस कर पाऊँगा
क्या तुम्हारे कंपकंपाते होठों
प्यारी आँखों
और गर्म साँसों का यौवन
हमेशा के लिये बरकरार रहेगा

मैं यह भी सोचता हूँ कुछ पल के लिये
कि शायद
यह वक़्त अब ठहर जाएगा तुम्हारे लौटने तक
क्योंकि हमारे इन्तज़ार की परछाईं में
तुम मौजूद हो,
हाँ, तुम्हीं मौजूद हो। ❑

साथ-साथ

मेरे शब्दों में
तुम्हारे नाम की दीवानगी
हमेशा महफ़ूज़ रहती
जो तुम मेरी ढलती उम्र को
अपनी पनाह में लेते
मेरे गुनाहों को अपने आँचल में छिपा लेते
और मेरे दर्द को अपना दर्द समझते
मेरी परेशानी में मेरे हम कदम साथ-साथ चलते
मेरे सफ़र के आख़िरी पड़ाव तक
जहाँ से हमारे तुम्हारे बीच पनपे
एक नये रिश्ते की शुरूआत होती। ❑

Poet has played beautifully with the words. He has very intelligently expressed his love to his beloved. He believes in togetherness & oneness.

कोई बात चले

कोई बात चले तेरे हुस्न की
तेरी पाकीज़गी की
तेरे रिश्तों की
तेरी मासूमियत की

कोई बात चले
तुम्हारे ख़्वाबों की
तुम्हारी इबादत की
वो बारिशों में भीगने की
वो तपती तिलमिलाती धूप में
बेपनाह इन्तज़ार की

कोई बात चले
ढलती शामों की
सुरमई रातों की
घुप्प अंधेरों की
तेज़ रोशनी की

कोई बात चले

मन्दिरों में पूजा की
मस्जिद में अज़ान की

कोई बात चले
वादियों में ख़ामोशी की
तन्हा पत्थरों की-
'परिन्दों की
इन घटाओं की - फ़िज़ाओं की
भटकी रूहों की
और कोई बात चले हम दोनों के
'पुनर्जन्म' की। ❑

Once again ~~poet~~ reflection of love is seen in the poem in totality. Poet wishes to be in the environment where is only & only his beloved is being discussed. May it be in any conditions.

तुम्हारी तस्वीर

यह वो ख़ूबसूरती है
जिसे महसूस किया जा सकता है तज़किरा नहीं
इन नीले आसमानों पर
ये बादल के टुकड़े
तैर कर तुम्हारे आँचल में पनाह लेते हैं
इस का एहसास है हमें
पर क्या तुम्हारे आँगन के किसी कोने में
धूप जन्म लेती है कि नहीं
नहीं... शायद नहीं...
इसलिए इस घर के दर-ओ-दीवार
हमेशा पिघलते रहते हैं
और टूटी छत से
पानी की कुछ बूँदें
जा गिरती हैं तुम्हारी मुस्कुराती तस्वीर पर
जो बरसों से
इन तन्हा ख़ामोश पत्थरों को
अपने हुस्न-ओ-जमाल से
रौनक़ बख़्शती आ रही हैं। ❑

एक उम्मीद

सीने में आग है
आँखों में जलन है
मेरे रास्ते की हर रहगुज़र
क्यों इतनी कठिन है?

माँगी थी रोशनी
पर अंधेरों ने दामन थाम लिया है
चाहा था फूल खिलें मेरे आँगन में
पर काँटों से दोस्ती हो गई
कई बार
इस तरह के सिलसिले जारी रहे
और हम उफ़ तक न कर सके
शायद मेरा वादा था ज़िन्दगी से
जो निभाता आ रहा हूँ मैं
जन्मों जन्मों से
एक उम्मीद के साथ
कि तेरा मेरा मिलन होगा
किसी न किसी जन्म में। ❑

सिरफिरे मौसम ने

आज ये मन क्यों उदास है
क्या मेरी गली से गुज़रना वो अब भूल गई हैं?
आज इन आँखों में ये अश्क क्यों बह रहे हैं?
क्या अब भी वो अपनी दुनिया से नाराज़ है
आज मुझे भीगना अच्छा क्यों नहीं लगता है
जबकि आज की ये बारिशें
मेरी दुआओं में शामिल थीं
अक्सर तुम्हारे आने की आहट
मेरी ख़ामोशी को क्यों सुला देती है
क्यों? तुम्हारी यादें आ-आ कर मुझे रुला देती हैं?
क्यों? आज यहाँ इन ज़मीनों पर
अब भी मोहब्बतों का बँटवारा किया जाता है?
क्यों? अब भी यहाँ इन बोलते परिन्दों की
सर-ए-आम बोली लगाई जाती है

देखे हैं हमने मौसम-ए-पतझड़
बिन मौसम-ए-बहार
क्यों? एक आरज़ू हर पैहर
याद दिलाते हैं मुझे तुम्हारी यादों के मौसम

जब चाँदनी रातों में
साथ-साथ मिला करते थे हमारे साथ
क्यों? मैं तुम्हारे एहसास को
अकसर अपनी तन्हाइयों में महसूस करता आया हूँ
क्यों? तुम मेरे ख़्यालों में
धुंधली तस्वीर बन कर उतर जाती हो
क्यों? मैं अपने घर की दीवारों में तुम्हें सजाता हूँ
अपनी विरानी को आबाद करने के लिए
क्यों? तुम मुझे अपने एहसास के घरौंदों में
शामिल करने की खुदा से इलतिजा करते हो
क्यों? यूँ ही इस सिरफिरे सफ़र के मौसम में
तुम्हारी आमद होती है धीरे-धीरे
बिना कुछ कहे, बिना कुछ सुने - ❑

There seems to have a big ~~ga~~ difference in what poet ~~a~~ feels in first of half of his poem & the last part of the Couplet. Both the parts of the poem seems to be contradictory.

~~First bog~~ Initially the poet expresses his doubts towards his beloved. Middle portion of the poem reflects his love & affection towards the beloved. Last para indicates once again ends up with lot many doubts & questions to his beloved his love & affection

Once again the poet expresses love & affection to his beloved. His regards & respects towards his beloved is beyond limits.

तुम्हारा साया

चलते चलते
तुम्हारी दुआओं का असर देखेंगे
और सर-ए-राह अपने इन्तज़ार को महफूज़ रखेंगे
अपने महबूब के लिए-
उस महबूब के लिये
जो हर दम मेरे साथ, मेरे पास रहता है
मेरे साये की तरह
तुम्हारे कुछ ख़्वाबों ने एक मुद्दत के बाद
दिल में क्यों आज आस जगाई है
कि तुम्हारी साँसें, तुम्हारी धड़कनें
मेरे आने वाले कल का नसीब हैं-

हमारे हाथ भी उठते हैं
अब तुम्हारी दुआओं में
जब मेरे कारवाँ में तुम्हारा साया
मेरे साये के हमराह
इस रेतीले सफ़र में
मील के पत्थर की तरह
रह-गुज़र में शामिल तो होता है
पर रू-ब-रू नहीं होता। ❑

Poet is a little desperate due to the physical separation from his loved one. He is very sure to have very tough journey of life but still wishes his beloved a smooth & adorable journey.

पीले पत्तों के मौसम में

उदासी भरे
इन पीले पत्तों के मौसम में
सिर्फ़ तुम्हारी यादें साये की तरह
मेरे साथ-साथ हैं
मेरे पास पास हैं
परछाइयों के इस सफ़र में
हमारे रास्ते पथरीले हैं
पर तुम्हारे हैं
उम्मीदों से भरे तुम्हारे लिए फिर सुबह होगी
और हमारे नसीब में है हिज़्र की ढलती शामें
इन रेतीली हवाओं का रुख क्यों नहीं कोई मोड़ लेता है
क्यों नहीं कोई मुझे अपने दामन में पन्हा देता है
मेरी चाहतों को हमेशा ये कौन दर्द का लिबास पहनाता है
क्यों कोई मुझे राह-ए-रुसवा छोड़ कर यूंही चला जाता है
यह कह कर
कि मैं लौट कर तुम्हारे ही पास आऊँगी
जीने के लिए
यह मेरा ही क़सूर था जो
उदासी भरे इन पीले पत्तों के मौसम में

मैंने तुम्हें चाहा है अपनी चाहतों की तरह
तुम्हारे आसमाँ में
अपनी परवाह लिए बुलंदियों को छूने की आरज़ू की
तुम्हारे हाथों की लकीरों में
अपना मुकद्दर तलाशना चाहा
ये सोच कर कि मेरे आँसुओं से
शायद कभी भीगेगा तेरा प्यार- ❑

Poet wants to impress upon his beloved the limitless love for beloved.

आरज़ू में

कुछ तो है
जो बे-वजह तुम मेरी ज़िन्दगी में आकर
मेरे मासूम ख़यालों को तन्हा कर जाते हो
और मैं तुम्हें सोचता रहता हूँ देर तक
कि तुम मुझे अपने आँचल में जो छिपाते
तो शायद मैं ख़ुदा से जीने की आरज़ू करता
गुज़ारिश करता
मेरे एहसास को तुम संभालते
मेरी धड़कनों में मेरे साथ शामिल हो जाते
मेरे अधूरे सफ़र में मेरे हमसफ़र बन जाते
मेरी विरानियों को तुम आबाद करते
मेरी राहों को तुम मुनव्वर करते
अपने सितम, अपनी परेशानी मुझे दे देते
मगर ये हो न सका
क्योंकि तुम्हें जाना था दूर
किसी और की दुनिया में
जहाँ शायद उजाले
तुम्हारी राहों को रौशन करने के लिए मुंतिज़र हैं
जहाँ पिंजरों में क़ैद परिन्दे

तुम्हारे आने का इंतज़ार करते हैं
अपनी आज़ादी के लिए
जहाँ ये बे-ज़ुबाँ पत्थर कुछ बोलने की फ़िराक में हैं
जहाँ ये अपनी ख़ामोशी तोड़ने के लिए तरस रहे हैं
बेचै हैं
मगर अब मुझे ख़ुद को सम्भालने के लिए
किस के हाथ उठेंगे मेरी दुआओं के लिए... ❑

Poet realises the reality of life. He seems to have been approaching towards the practicality.

टूटने के बाद

Wrongly placed in the sequence of Poems. Should have been in the last of the page in the book.

जब रिश्ते टूट गए
तो फिर कल्पना क्यों करे
क्यों तुम्हारे बारे में सोचें
क्यों तुम्हारे दिए हुए तोहफे सम्भाल कर रखें
फिर क्यों न हम तुम्हारे लिखे हुए ख़त जलाएँ
तुम्हारी दी हुई निशानियाँ इन पानियों में बहा दें
तुम्हारे घर तक जा रहे इन रास्तों को
भूल जाने की कोशिश करें
जब ये रिश्ते टूट गए
तो फिर हम क्यों उजालों का इन्तज़ार करें
क्यों न घुप्प अंधेरों में गुम हो जाएँ
तन्हा चलें
चलें बचपन के आगोश में
मिट्टी के खिलौनों से टूटी दीवारों को सजाएँ
रंग बदलती दुनिया की तस्वीरों को
आख़िरी बार अपने कैनवास पर उतारने की कोशिश करें
शायद इस बार
मैं एक पा-ए-दार तस्वीर बनाने में सफ़ल हो जाऊँ। ❑

Remembering the good old days when his love was blooming in lush green natural & beautiful environment.

बदला हुआ कुछ

यही वो जगह है
जहाँ हम मिले थे कभी
सब कुछ अपनी जगह बरक़रार है क़ायम है
हाँ, ये चिनार तब बहुत छोटा था
पर अब इसी की शाखाएँ
आसमाँ से बातें करने लगी हैं
इसके नर्म नाज़ुक परछाइयों में बिछे
मख़मली घास पर
करवटें लेने को दिल कर रहा है
क्योंकि यह जगह आज भी वैसी ही है
जैसे पहले कभी हुआ करती थी
जहाँ सुनहरी शामों से पहले
गरूब (तलु) होते आफ़ताब का मंज़र
हमारी साँसों को ताज़गी बख़्शता रहा
ये हवाएँ हमारी रूहों को
अमन-ओ-सुकून से नवाज़ती रहीं
ये पानी अमृत से कम नहीं
यहाँ इन परिन्दों की मीठी-मीठी बोली
सरगम की तान छेड़ती थी

और हर कोई
अपनी आवाज़ इनकी बोली से मिलाया करता था
ताकि यहाँ का माहौल संगीतमय हो
बदला अगर है कुछ
तो वो है
सिर्फ हमारा अतीत
हमारा माज़ी
हमारा-बचपन
जो शायद कभी भी लौट कर नहीं आ सकता- ❑

Poet convinces himself with the sweet old memories of the past. He knows that the past can never be brought back but still ~~tryes~~ tries to keep himself ~~bee~~ contented with what he had experience with his beloved.

तहरीरें और तस्वीरें

पिछले मौसम की
चन्द मासूम तस्वीरें
कुछ तहरीरें
अब भी महफ़ूज़ हैं हमारे पास
हमने इन्हें तपती धूप,
तेज़ बारिशों और घुप्प अंधेरों से बचा के रखा है
ये तस्वीरें-तहरीरें ही हमारा सरमाया होती हैं
क्योंकि ये हमें हमारा वजूद पहचानने में
मदद करती हैं
और हमें भटकने से रोक लेती हैं
परिवर्तन संसार का नियम है
और इन तहरीरों और तस्वीरों को छूने से हमें
इस बात का ज़रूर एहसास होता है
कि वाक्या ज़िन्दगी के हर पड़ाव पर
बदलाव की एक अपनी ख़ास अहमियत है
ग़र ये तहरीरें और तस्वीरें अब धुंधली हो चुकी हैं
लेकिन ना जाने क्यों
आज भी इनकी खुशबू में
पिछले मौसम की तर-ओ-ताज़ा और जावेदाँ होती है! ☐

उसका जाना

क्यों चले जाते हैं
वक्त से पहले
वो लोग जिन्हें ज़माना हमेशा याद करता है
वो मेरे साथ था मेरे ही साये की तरह
मेरे पास था - मेरी परछाईं की तरह

पर अब छूट गया
चला गया
ले गया अपने साथ
मेरी आँखों की रोशनी
मेरे चेहरे की मुस्कान
छोड़ गया मुझे मेरी मायूसी के साथ
दे गया मुझे परेशानियाँ और आवारग़ी

ये जहाँ
क्या तुम्हें कभी भुला देगा!
नहीं! शायद कभी नहीं
क्योंकि तुम छोड़ गए हो
इस महफ़िल को वक्त से पहले

ये दुनिया है सराय
कहावत मशहूर है
है कोई 'मस्मार' तो कोई 'मखमूर' है
कुदरत के हाथों यहाँ हर कोई मजबूर है। ❑

चाहत में

मुझे उस मौसम का इन्तज़ार था
जिसमें तुम हरियाली बनकर
मेरे विराने में
सरसब्ज़ शादाब तर-ओ-ताज़ा
हवाओं का लिबास पहनाते
ख़ुशबू बन कर मेरी ज़िन्दगी में रौनक़ बख़्शते
मुझे मेरी तन्हाइयों से दो घड़ी अलग करते
अपने आँचल में छिपाते
छूने का मुझे हौसला देते
जी लेते हमारे साथ ख़ुशी और ग़म में
तुम मुझे यकीन दिलाते
मैं भी आपकी राहों में तकती आ रही हूँ
सजदा किए सदियों से उस उम्मीद से
कि दो पल ज़रूर आएँगे
जब हमारी भटकी रूहों का मिलन होगा
और हम दोनों की तपती सहर में
मौसम-ए-बहार दस्तक देगा
क्योंकि मैंने तुम्हें चाहा है
अपनी चाहतों की तरह। ❑

सिलसिले ख़्वाबों के

मैंने तुम्हारे चेहरे के तबस्सुम को
गुम होते हुए देखा है
राख के ढेर में न शोला है न चिंगारी
ज़लज़ले हैं
पर कोई लरज़ता क्यों नहीं
मौत है
पर कोई मरता क्यों नहीं
ये सिलसिले हैं ख़्वाबों के
इन्हें बस मेरे साथ
मेरे पास रहने दिया जाए
मेरी ख़ामोशी का लिबास बन कर
एक लम्बे अर्से के बाद
मैंने तुम्हें ख़्वाब में देखा है
ख़ामोश किनारों से गुज़रते हुए
रेतीली राहों पर
अपने पैरों के निशान बनाते हुए
पीछे छोड़ते हुए
शायद अपनी तक़दीर को कोसते हुए
बीते लम्हों को सहलाते हुए

ज़ख्मों को सिलते हुए
बिखरे बालों को संवारते हुए
नीले रंग के दुपट्टे को
सम्भालते हुए -
मैंने तुम्हें देखा है- ❑

तुम्हारी पनाह में

जब-जब दर्द जन्म लेता है
तब-तब तुम्हारे आसरे की
ज़रूरत महसूस होती है
मेरी मुश्किलों में
तुम जो मुझे अपनी पनहा में लेकर
मेरे कांधों को थपथपाती रही
मेरे बालों को सहलाती रही
मेरे कदमों की आहटों को नापती रही
मेरी विरानी को गुलज़ार करती रही
आज इस भीड़ के कोनों में
क्यों हर कोई अपनी परेशानी छिपाता है? ❑

हथेली के आईने में

तुम्हारी हथेली के आईने में
मैंने अपने चेहरे के
बिखराव को महसूस किया है
कितना बदल गया है ये मेरा चेहरा
इस की मासूमियत में जन्म-जन्म के रिश्ते मौजूद हैं
तुम्हारी हथेली के आईने में
मैंने अपने आने वाले कल के नसीब को
अपनी ही उम्मीदों से नापा है
क्योंकि सदियों के सफ़र को
हमने अपनी मुट्ठी में कैद कर लिया है
तुम्हारी हथेली के आईने में
मैंने सपने देखे हैं
तुम्हारे साथ भीगने के
तुम्हारे साथ जीने मरने के
शायद हम दोनों का सफ़र
रेतीले रास्तों से गुज़रा होगा
इसलिए तुम्हारी हथेली के आईने में
हम दोनों अपनी थकान महसूस कर रहे हैं
तुम्हारी हथेली के आईने में

मैंने चाँद को निहारा है
और अब तुम्हारी सूरत
टुकड़ों में मैं महसूस कर रहा हूँ
मेरी धड़कनों में तुम हमेशा शामिल रहे हो
इसीलिए तुम्हारी हथेली के आईने में
मैंने माज़ी की दीवारों को
सरसब्ज़ मख़मलीं रोशनी में
तब्दील होते हुए देखा है
मैंने तुम्हारी हथेली के आईने में
अपनी भटकती रूह की तड़प
और आह-ओ-ज़ारी। ❑

ये हो न सका

वक्त से पहले ग़र तुम मिल गए होते
तो शायद
हमारी मंज़िल का बँटवारा नहीं हो पाता
और ये सफ़र
हमारी खोई हुई पहचान को ज़िन्दा रखता
लेकिन ये न हो सका
और सिमट गई हमारी यह छोटी सी दुनिया
इस अंधेरे कोने में
यहाँ रोशनी का कोई
नाम-ओ-निशां तक नहीं। ❑

कोहरे की चादर

कोहरे की चादर में लिपटी
हमारी ज़िन्दगियाँ आज बे-बस क्यों हैं
ये शामें इतनी घनी, इतनी मजबूर क्यों हैं
क्या ये सितारे टिमटिमाना भूल गए हैं?
क्या हमारे आसमानों में ये चाँद अब बसता नहीं?
क्या अब यहाँ रात के बाद सुबह नहीं होती?
क्या यह ख़ामोश पानी अब हमारा नहीं?
क्या ये शब की हवायें
अब उसे छू कर नहीं आतीं?
क्या इन सन्नाटों को चीरती......
मदहोश करती उनकी साँसें...
अब हमारी फ़रियाद सुनने से कासिर हैं?
क्या अब यहाँ इबादतगाहों में
गुनहगारों की सुनी जाती है?
क्या यहाँ वक्त अब ठहर चुका है?
क्या कोहरे की चादर में लिपटी
हमारी ज़िन्दगियाँ -
यूँ ही भटकती रहेंगी बेवजह? ❑

उम्मीद में

धड़कते दिलों के एहसास को
महसूस करने के लिए
हमारी नज़दीकियाँ अक्सर उड़ान तो भर लेती हैं
पर 'गहराइयों' को छू नहीं पातीं
शायद यहीं से ज़िन्दगियों ने तड़पना शुरू किया है
एक सहारे की ज़रूरत है
हमारे आने वाले कल को
क्योंकि बे-परवाह इन काफ़िलों में
हम ही सिरफिरे थे
जो तुम्हारी उम्मीदों में
गुमनामी की ज़िन्दगी काट रहे हैं
यह सोचकर
कि 'वो' मेरा दामन भर देगा
अपनी रहमत से
अपनी नवाज़िश... अपनी मेहर से। ❑

पंछी उस पार के

बे-शक
अब ये सरहदें बाँटती हैं इनसानों को
पर जज़्बात का बँटवारा
फिर भी न हो सका
क्या कहा तुमने
क्या इसीलिए खींच लेते हैं हम
लकीरें इन सरहदों पर
ताकि फिर से इन्सानी रिश्ते बिखर जाएँ
और खाली हो जाए हमारा एहसास
पर इसके बावजूद
हमने सम्भाल के रखी है
अपनी तहज़ीब और तमीज
तभी शायद
उस पार के ये पंछी
अपनी दीवानगी के आलम से
हमें मदहोश करते हैं
और हाँ तुम्हारी खैरियत से
आगाह भी करते हैं। ❑

चले आओ

अचानक
कुछ रिश्ते पल भर में बनते हैं
और पलभर में मिटते हैं
क्यों न
उन बीच के फ़ासलों को
हम दोनों कोई नाम दें
ताकि भटकी हुई रूहों को
सुकून मिल सके
शायद वो फ़ासले
हमें, हमारे अतीत के
हसीन पलों की यादों को
फिर से ताज़ा करने में कामयाब हों
वैसे भी
ज़िन्दगी तो एक फ़ासला ही है
मौत से मौत तक
कभी-कभी ये फासले
रिश्तों को मज़बूती की सौगात अदा करते हैं
और फिर हम
गुमनामी की दुनिया को अलविदा कहते हैं

हमेशा-हमेशा के लिए
चले... आओ
उस पार से इस पार तक
इन फ़ासलों को कुछ पलों के लिए मिटा दें
यहीं से शुरू करें एक ऐसा रिश्ता
जिसका कभी कोई अन्त न हो। ❑

बिना साहिल के

आज हमारे ये रिश्ते
किसी पहचान के मोहताज नहीं
इन रिश्तों की ख़ुशबू से
महक उठती है हमारी दुनिया
तुम्हारी दूरी से ये रिश्ते
कभी मिट नहीं सकते हैं
क्योंकि हम हैं जन्म-जन्म के साथी
यह तुम भी जानते हो और मैं भी
क्या हुआ
इस नदी के किनारे
पानी छुए बिना रहे
क्या हुआ
इन मौजों ने
ख़ामोश साहिलों की जानिब रुख़ किया
क्या हुआ
इन लहरों के साथ
इस नदी के किनारे बह गए
ग़र यही दुनिया का दस्तूर है
तो आओ! आओ!

क्यों न फिर से तलाशें
उस नदी को
जो बिना किनारों के हो
बिना मौजों के हो
बिना साहिलों के हो
ताकि हमारे इन रिश्तों को
फरिश्ते भी झुक कर सलाम करें। ❑

बिखरे ख़्वाब

धरती के आँगन में
जहाँ रेत के टीलों पर
मुसव्वर खींच लेता है
अपने ख़याल की लकीरें
शायद यह सोच कर
कि इन सहराओं में भटकती
रूहों को सुकून मिले
और बिख़रे ख्वाबों के आग़ोश में
हम अपने आशियाने की तामीर को
मुकम्मल कर सकें
भूल जाएँ तुम्हारे दिए हुए हर दर्द ज़ख़्म को
समझाएँ इस मासूम दिल को
कि यहाँ रिश्तें
रेत के टीलों की मानिन्द हैं। ❑

रोशनी के साथ-साथ

मेरी हसरतों की दुनिया में
इन धुंधली तस्वीरों में
यह जाना पहचाना चेहरा
आज फिर से क्यों गुम हो गया है
मेरे इन लम्हों ने क्या ख़ता की है
जो तुम अक्सर मेरे वजूद को तन्हा कर जाते हो
टुकड़ों में बाँट लेते हो
और चले जाते हो यूँही बेवजह
शायद मेरा यही क़सूर था कि
मैंने चाँद को ज़मीन पर माँगा
सितारों को नहलाने की कोशिश की
बादलों को मुट्ठी में कैद करने की चाहत की
इन फिज़ाओं, इन हवाओं की रफ़्तार को
तुम्हारे आँचल में छिपाने की जुर्रत की
सूरज को देर से जलवा अफ़रोज़ होने की गुज़ारिश की
चाँद को चाँदनी बिखेरने से रोका
और तुम्हारी मासूम मुस्कराहट की बेताबी को
मील का पत्थर साबित करना चाहा
तुम्हें मैं तैरते बादलों में अक्सर महसूस करता रहा

रोशनी के साथ-साथ
इस ज़मीन पर साये की तरह
मेरे नसीब को तुमने सँवारना चाहा
मगर ये हो न सका
क्योंकि मेरा वजूद मुख़्तसर सा था
और मेरी हसरतों की दुनिया
काँच के टुकड़ों की तरह बिखर गई
मेरी धुंधली तस्वीरों में
मेरा जाना पहचाना चेहरा
फिर से गुम हो गया
और पीछे छोड़ गया गुमशुदगी का
ला तैदाद - निशान। ❑

जीने के लिए

शायद यहीं से
हमारे ग़म के मौसम की शुरूआत हुई
आज भी ये मौसम
सिरफिरा है, लरज़ता है
हर कोई इस मौसम के आमद पर
न तुम अपने वजूद को पहचान सके
और ना ही मैं
अपने अंजाम की बारीकियों को जान सका
इन हवाओं में तुम्हारी बे-बसी और लाचारी
आज भी साफ झलकती है
ये हवाएँ तुम्हें छू कर मुझ तक पहुँची हैं
और इसके बावजूद
मैं भूल कर भी तुम्हें भुला ना सका
क्योंकि मेरे आकाश के चाँद में
तुम्हारा मासूम अक्स मौजूद है
अब हमारे जीने के लिए
मेरे आकाश के चाँद में
तुम्हारा ज़ाहिर होना लाज़मी है
क्योंकि मुझे मेरे ग़म के मौसम में

तुम्हारे भीगे गेसुओं को सँवारना भी है
तुम्हारी झील सी आँखों में काजल लगाना है
तुम्हारे 'पाँवों' में मेहन्दी रचानी है
और सुर्ख जोड़ा पहनाकर तुम्हें रुख़सत करना है
अपनी खुशियों को नीलाम करके
मुझे अपनी बेसब्री और इन्तज़ार का
इम्तिहान जो देना है
शायद हर जन्म में। ❑

ख़फा आसमां

हम ने बर्फ़ को
आसमान में ही पिघलते देखा
यहाँ की बस्तियों में आग जो लगी थी
यहाँ मुफ़लिसी मजबूरी
चीख़-ओ-पुकार और आ-हो-ज़ारी का आलम था।
इसीलिए शायद हमारा आकाश हमसे ख़फा है
हमेशा नाराज़ रहता है
हर कोई यहाँ एक दूसरे से अलग है
और अपनी बे-बसी का मातम मना रहा है
यहाँ समय किसी का मोहताज नहीं
यहाँ मौसम बदलते हैं
और अपनी मर्ज़ी से सितारे टिमटिमाते हैं
यहां परिन्दे अपनी परवाज लिए
आसमां की बुलिंदयों को छूने की कोशिश करते हैं
यहाँ हर बात मुमकिन है
क्योंकि यहाँ जन्म मरन का सिलसिला
हमेशा से जारी है
और हर कोई इबादत गाहों में
सजदा किए, कुदरत की। ❑

गुलाबी चेहरे की खुशबू

तुम्हारे गुलाबी चेहरे की खुशबू
हर दौर में
मैं हर बार महसूस किया करता हूँ
ये हवाएँ तुम्हारे बालों में कंघी करती हुई तुम्हें
मेरे-पास होने का एहसास कराती है
इन फ़िजाओं में तुम्हारी पायल की छमछम
तुम्हारी चूड़ियों की ख़नक
और तुम्हारी नर्म-मासूम मुस्कान
मुझे मेरे बीते कल की हर बात याद दिलाती है
जब कभी
तुम्हारी मदहोश आँखों से आँसू छलकते हैं
यकायक दोपहर की धूप को
इन्द्रधनुष अपनी पनाह में लेकर
अपने आँचल में छिपा लेता था
यह सोच कर कि कहीं
तुम अपने वजूद से अलग न हो जाओ
और ता-क़यामत
तुम्हारे गुलाबी चेहरे की खुशबू
मैं महसूस करता रहूँ। ❑

चाँद निकल आया

तुम आए हो
तो आज से ही
भीगते मौसम में
सुनहरी धूप की शुरूआत हुई है
मगर इन सुरमई अंधेरों ने
इस पतझड़ के मौसम में
तुम्हारी शफक़्त भरी नज़रों ने
मुझे क्यों कर किनार किया है -
शायद तुम इन पगडंडियों पर
भीगना नहीं चाहते हो
जबकि इन घटाओं ने
बदलते पथरीले मौसम में
बारिश की बूँदों को
अपनी हथेली में समेटना चाहा
फिर भी तुम्हारे रास्ते में
ये चाँद निकल ही आया
तुम्हारी तारिक राहों को रौशन करने के लिए
वक़्त से पहले। ❑

मैं पागल हूँ

मैं पागल हूँ
हवा को छूता हूँ
खुशबू को ढूँढ़ता हूँ
पानी को पकड़ता हूँ
रूहों से मोहब्बत करता हूँ
क्योंकि मैं पाग़ल हूँ
टिमिटिमाते सितारों की करवटों में
शबनमी बूँदों की रंगोली से
इंन्द्रधनुषी बटवारे की लक़ीरें खींच लेता हूँ
आसमान से नज़रें मिलाता हूँ
चाँद को निहारता हूँ
सुनसान राहों को तन्हा रातों में तकता रहता हूँ
चाँदनी रातों में
अपने ही साए से लिपट जाता हूँ
क्योंकि मैं पागल हूँ -
मैं पागल हूँ सच में मैं पागल हूँ
घुप्प अंधेरों में
खुद के साथ सफर करता हूँ
भटके परिन्दों की रहनुमाई करता हूँ। ❑

ख़ामोशी में डूबा

क्या इस झील की ख़ामोशी में
मेरा अक्स डूब गया है इस ठहरे हुए पानी में
आज लहरें इस किनारे से उस किनारे तक
अपना सफ़र तय क्यों नहीं कर पा रही हैं?
शायद अब यह पानी मेरा नहीं
क्योंकि मुझे छूने की आदत अब यह भूल चुका है
यह मेरे पैरों की उँगलियों को
सदियों से भिगोता आ रहा था
मुझे पा के उछलता था
शोर मचाता था
लेकिन अब मेरे अक्स को
अपनी गहराई में धुँधला करता है
मैला करता है
और मैं
साहिलों की विरानी नापता रहता हूँ। ❑

टूटते तारों का मंजर

नीले आसमां में
तैरते बादलों के मंजर को
महसूस करने के बावजूद
हमने सारी ज़िंदगी
चाँद सितारों को पाने की तमन्ना में
यहीं गुज़ार दी है
जबकि हम यह भी जानते हैं
कि ना तो आकाश में बादल ही तैरते हैं
और ना ही हमारे नसीब में ये चाँद-सितारे हैं
हाँ, अकसर तन्हा और सुनसान रातों में
आकाश से टिमटिमाते हुए सितारों के
टूटने का मंज़र मेरी नजरों से गुज़रता है
और हमें इस बात का एहसास ज़रूर कराता है
कि यह दुनिया फानी है
हमें एक ऐसी सच्चाई का सामना करना पड़ेगा
जिसके लिए हमने इस धरती पर जन्म लिया है
इसलिये कि शायद हम
उन टूटे हुए सितारों की जगह लेने में
सफलता हासिल कर सकें! ❑

साये पत्थरों के

न जाने क्यों
मेरे आग़ोश में
दुख के बादल पनाह लेते हैं
और सुख की धूप
हमेशा किनारा करती है मुझसे
मानता हूँ
खुशी तो पल दो पल की मेहमान होती है
और ग़म दूर तक साथ देता है
मेरे घर से गुज़रती
यह नदी अचानक क्यों सूख गई है
इन हवाओं में आज
बे-रुखी क्यों है?
यही वो फिज़ाएँ थीं
जो मेरे बालों को सँवारा करती थीं
पर अब मुझे छूने से ये गुरेज़ क्यों करती हैं
मेरे घर के आंगन में पड़े
इन पत्थरों की तन्हाई का अहसास है मुझे
जबकि यही पत्थर
चाँदनी रातों में मुस्कराते थे

अपने ही सायों से बातें किया करते थे
न जाने आज क्यों
मेरा मन उदास है-
मेरी धड़कनों में तुम
शामिल क्यों नहीं हो सके? ❑

परियों का शहर

'वहाँ' हाँ वहाँ परियाँ रहती हैं उस शहर में
जहाँ चारों ओर खुशबुओं के डेरे हैं
और वहाँ परियाँ अपनी उड़ान भरती हैं
रंग और नूर में लिपटी ये परियाँ
ख़लूस-ओ मोहब्बत का लिबास पहने
अमन का पैगाम बाँटती रहती हैं
भरोसा कीजिए वहाँ ख़्वाब बिखरते हैं
और हकीकत जन्म लेती हैं
वहाँ परियों के शहर में
मदमस्त हवाएँ गुनगुनाती हैं
आसमानों में ही बर्फ़ पिघलती है
हाँ वहाँ परियों के शहर में
मुस्कानों के आबशार गूँजते हैं
तितलियों की सदायें सुनाई देती हैं
झरनों का मधुर संगीत
रूहों को सुकून और ताज़गी बख़्शता है
क्योंकि वहाँ उस शहर में परियाँ रहती हैं। ❑

रोशन लम्हे

मेरा हर वो लम्हा
अब तुम्हारे बगैर अधूरा है
जिस में तुम शामिल नहीं
मानता हूँ
तुम हर मौसम में मेरे पासबाँ रहे
मेरे करीब रहे
मेरे अंधेरों को तुम ने
मुनव्वर किया
मेरे साये को अपनी परछांई समझा
और मुझे मुश्किलों में
सितारों भरी शाम से रूबरू कराया
अपनी अदाओं से मेरे एहसास को ज़िन्दा रखा
यह तुम्हारा एहसास
मेरे हर उस लम्हे को रोशन रखेगा
जिसमें तुम शामिल हो
पर सिर्फ ख़यालों में। ❑

आख़िरी किरण

कभी मेरी चाँदनी सुबह खिल उठती थी
तुम्हारी सुनहरी मुस्कानों से
और न जाने ये अब क्यों
बे-वजह परेशान हो कर
बरसने की कोशिश करता रहा
जबकि मेरे उस दौर की धूप में
मैं अपने ही साये से लिपटता रहा
अक्सर ये सोच कर
ढलते सूरज की आखरी किरण
शायद मेरे आने वाले कल को सँवारने में
मेरी मदद कर सके
जानता हूँ / ख़्वाब पल भर में बिखरते हैं
और हक़ीकत डराती है
पर हाँ यकीन है / फिर वो सुबह होगी
जो हमें, तुम से रू-ब-रू कराएगी
तुम से नई पहचान कराएगी
रिश्तों की अहमीयत समझाएगी
क्योंकि तुम्हारी मुस्कुराहटों में
मैं अक्सर अपने तसव्वुर को महसूस करता हूँ।

तुम्हारे आने तक

फैला है आँचल आसमानों का
धरती के इस मख़मली हिस्से को
ढकने के लिये
शायद फिर से कोई
हवा का हल्का सा झोंका आ जाए
उस से छू कर
फिर मेरे बदन से लिपट जाए
मेरी रूह में उतर जाए
ताकि मेरी यादों को ताज़ा कर

वो सामने पहाड़ियों के दामन में बसा हमारा घर
हमारे ख़्वाबों का आशियाना
अभी भी महफ़ूज़ है
पिछले कल की तरह
यहाँ हर रात चाँदनी!
आज भी आया करती है हमसे मिलने
और छुपा लेती
इस असीम ख़ामोशी को अपने दामन में
महफ़ूज़ रखती है हमारे ख़्वाबों को

फिर क्यों ना करूँ मैं
इन्तज़ार तुम्हारे लौटने का
और छिप जाऊँ तब तक
इन्हीं बर्फीली बस्तियों में
जब तक तुम ना आओ। ❑

चलो चलें

चलो चलें यहाँ से
और भूल जाएँ तल्ख़ियों के इस सफ़र को
फिर से छू लें अपनी ज़मीनों को
और कुछ पल बहक जाएँ
भूल जाएँ
सूरज के उसपार की गर्मी को
निकल पड़ें उस सफर पर
जहाँ ग़म और परेशानियों के काफिले
मीलों दूर हों
जहाँ सिर्फ अपने आप का
अपनों से एक अपनेपन का एहसास हो
जहाँ कोमल हवाएँ
हर दिन एक खुशी का संदेश ले कर आएँ
जहाँ रूह का हर मोड़ पर रूह से मिलन हो
चलो चले यहाँ से
और भूल जाएँ तल्खियों के इस सफ़र को। ❑

रास्ते प्यार के

ये हैं प्यार के रास्ते
मोहब्बत की राहें
और हम तलाशते हैं
अपने आने वाले कल को
वो कल जिसमें हमारी ज़िन्दगियाँ रौशन हो सकें
ताकि हम जी लें सुकून से
जाने अनजाने कई बार वक़्त ने करवट ली
शायद हम
तुम्हारे आग़ोश में पनाह ले सकें
क्योंकि तुम जो तकती रहती हो
इन प्यार के रास्तों को
और तुम्हारी बाहें मुन्तज़िर रहती हैं
मुझे अपने आगोश में लेने के लिये। ❑

ख़्वाबों की ताबीर

ख़्वाबों की ताबीर हो
इन्द्रधनुषी मौसमी बारिश हो
ज़िन्दगियों में बहारों की बौछार हो
समय को ठहरने की इज़ाजत हो
चाहतों में चुम्बक जैसी जुबिश हो
साँसों की गर्माहट में
होठों की कंपकपाहट हो
इन कदमों की आहटों में
पुनर्जन्म का एहसास हो
आशयानों में लगी आग हो
टूटे आइनों में बिख़रती तस्वीरें हो
लेकिन सिर्फ़ तुम मेरे ख़्वाबों में हो
मेरे ख़्वाबों की ताबीर हो। ❑

जेहन के केनवास पर

इन रेतीली हवाओं का रुख
आज बे-असर क्यों है
सरगोशियाँ करती यह फिज़ाएँ
शायद तुम्हारे मख़मली गेसुओं को
छू कर आई है
'वो' तुम थे जो अपनी खुशबू से
हमारा दामन भरते रहे और वो हम थे
जो तुम्हारी पनाह में
बे-इख्तियार खोते रहे
इस तरह यूँ ही बीत गए साल-हा-साल
अपनी मदहोशी की नीलामी में
यह तसव्वुरात की दुनिया भी अजीब है
जहाँ हर बार
हम अपने ज़ेहन के केनवास पर
अपने किरदार बदलते रहते हैं
यह सोचकर कि हमारा सामना
कभी न कभी हकीकत से हो जाए। ❑

न ख़ुदा ही मिला

कुछ तुम्हारे वादे टूट गए
कुछ ख़्वाब बिखर गए
और कुछ हमारी तुम्हारी कोशिशें भी नाकाम हुईं
हम तो सजदों में मसरूफ रहे
और फिर भी
ना खुदा ही मिला न विसाल-ए-सनम
न इधर के रहे और न उधर के
मोहब्बतें मुफ़लिसी के दौर में पास रहतीं
ग़र तुम दूर न चले जाते
और हम यूँ ही तन्हा पत्थरों के साथ
नीलाम न हो पाते
हमारे तुम्हारे बीच
इन फ़ासलों के दरमियान
यह जलता हुआ सूरज
कब तक हमारी निगहबानी करता रहेगा- ❑

इन्तज़ार का मौसम

धीरे-धीरे
ये सारे मौसम बदलते रहे
पर तुम्हारे लौटने के इन्तज़ार का मौसम
अभी लुप्त हो चुका है
और दरियाओं की रवानी थम चुकी है
अब के सावन में
बर्फ़ पिघलते ही
शायद तुम लौट आओ
मेरे पतझड़ की विरानी को दूर करने के लिये
मोहब्बत अब बे-जुबाँ है
ख़ामोश साहिलों में पानी की तरह है। ❑

तुम्हारे बाद

हाय! ज़रा सी आहट होती है
तो दिल कहता है
शायद वो आ गया है
बरसों बाद रौशन करने
गुलज़ार करने मेरे इन पलों को
जो बस अब हमारी याद बन कर रह गये हैं
जानते हैं
तुम्हारा लौटना मुश्किल ही नहीं
नामुमकिन है
क्योंकि जो चला गया
वो फिर से न कभी लौट के आया
तुम्हारे साथ
बीते हर लम्हें में
तुम अभी तक मेरे लिये ज़िन्दा हो
सुना है चाहतें हमेशा अमर हो जाती हैं
आज भी इस मासूम शब में
जब अचानक से आसमां की तरफ देखता हूँ
तो एक चमकता सितारा खोजता हूँ
क्योंकि तुम ने कहा था मैं एक सितारा बन जाऊँगी। ❑

खोया चाँद

यह रात है ख़ामोश
और आज की शब
ये सितारे बिना चाँद के तन्हाई महसूस कर रहे हैं
माना कि इस शब की ख़ामोशी को चीरती हुई
तुम्हारी दर्द भरी आवाज़ मुझे
तुम्हारे पास-पास होने का अहसास कराती है
पर क्या तुम हो मेरे हवनवा-हमराज़
शायद इस बात का अंदाज़ा लगाना
मेरे लिए मुश्किल है
क्योंकि तुम अक्सर गुम हो जाते हो
मेरी तन्हाइयों को चीर कर
और इस ख़ाली शब के
इन अंधेरों में
मैं ढूँढ़ता हूँ चाँद को
आज कहीं खो गया है। ❑

अधूरा सफ़र

क्यों यह सफ़र रहा हमारा अधूरा
शायद कुछ उलझनें पड़ी हैं सर-ए-राह
जो थाम लेती हैं दामन बे-वजह
क्यों वे-वजह
यह सूरज सफ़र में मेरा साथ छोड़ देता है
और मैं परछाइयों के हमराह
अपनी मंजिल की और निकल पड़ता हूँ
यह सोच कर कि
शायद मेरा यह अधूरा सफ़र
मंज़िल के साथ-साथ मुझे
मेरी खोई हुई पहचान वापिस दिला सके! ❑

दर्द की बदली

बड़ी मुद्दत के बाद
मुझे यह अहसास हुआ
कि तुम्हारी ज़ुल्फें बिखरी-बिखरी सी क्यों रहती थी।
तुम्हारे होठों की थरथराहट क्या कहती थी
और तुम्हारी आँखों के आइने पर
किसी की तस्वीर रहती थी

बड़ी मुद्दत के बाद मुझे यह अहसास हुआ है
ज़िन्दगी के हसीन लम्हात
मेरी कमज़ोर हथेलियों से निकलकर
कहीं खो गये हैं
लेकिन-आज
रंग-ओ-ग़म के फलक पै
दर्द की बदली छाई है
बड़ी मुद्दत के बाद फिर से तेरी याद आई है। ❑

इबादत की इबारत

सरहदें हैं मायूस पर
मेरे पाक तसव्वुर में
मेरी इबादत की इबारत तुम बन पातीं
ग़रचे बटवारे की लकीरें न खींची जातीं

अपनी उम्र के हर पड़ाव पर
सिले हैं अपने ज़ख्म
यह सोचकर
शायद आने वाला सफ़र
मेरी हर वो मुराद पूरी करेगा
जिस के हम हैं तलबगार
वक्त रौशन करेगा हमारी राहें
और आसमानों में रहने वाले फरिशते
दुआओं में हाथ उठाएंगे
हमारी मोहब्बत को अंजाम तक पहुँचाने के लिए। ❑

लम्हों की फरियाद

उन लम्हों की क्या ख़ता
जो तुम्हारी यादों को
मेरी रूह में शामिल तो करते हैं
पर बे-वजह
रुसवाइयाँ भी मेरे दामन को छू कर गुज़रती हैं
सहराओं में जलती धूप
और इस तपते मौसम की तपिश
यकायक मेरे साये को ढकता तेरा आँचल
रूहानी छाँव का एहसास महसूस करता हूँ मैं
महसूस करता हूँ इन बदलते लम्हों की फरियाद
इन की बे-बसी
इन की कसक
जो मेरे वजूद को दस्तक तो देती है
पर हम रहते हैं बे-ख़बर। ❑

तुम्हारे इन्तज़ार में

सुबह की ताज़गी
इन हवाओं-फिज़ाओं में तुम्हारी आमद
और मेरे ख़यालों में तैरती तुम्हारी याद की ख़ुशबू
अक्सर मुझे
तुमसे रू-ब-रू कराती है-

इसी तरह की सुबह हुआ करती थी
जब परिन्दे घोंसलों से निकल कर
अपनी परवाज़ लिए
मुझ तक तुम्हारे लौटने का पैग़ाम पहुँचाते थे
पर तुम फिर कभी लौट कर नहीं आए
हम आज भी झील के किनारे
तुम्हारे लौटने के इन्तज़ार में
सदियों से बे-क़रार हैं
सिर्फ़ एक झलक पाने के लिए
हमने आज तक सिर्फ़ तुम्हें महसूस किया है
कभी तुम्हें छू न सके। ❑

मखमली ज़मीन

चलो चलें सूरज के उस पार
और छू लें गर्म ज़मीनों की तपती मिट्टी को
और सुलगते रहें कुछ पलों के लिये
यहाँ की इन झुलसती बारिशों में
सिर्फ़ भीगने का एहसास
दिल के किसी कोने में बसा लें
यहाँ कदम-ब-क़दम
तपिश-सिसकियों आहोज़ारी का आलम
छाया हुआ है
जी लेते हैं यहाँ वो लोग
जो दर्द में डूबे हुए हैं
मिट जाते हैं, फ़ना हो जाते हैं पल भर में
वक़्त यहाँ ठहरा हुआ है
इन बस्तियों की बर्फ़ को
आसमान में ही पिघलते देखा है
यहाँ झीलों के सीनों में खंज़र तैरते हैं
और हमने ख़ून उबलते देखा है
पानियों में कश्तियाँ डूबी हुई हैं
और मल्लाहों को किनारे पै रोते देखा है

चलो चले यहाँ से
और भूल जाएं तल्लख़ियों के इस सफ़र को
फिर से छू लें अपनी मखमली ज़मीनों को
कुछ पल के लिये बहक जाएं भटक जाएं
सूरज के उस पार की गर्मी को
यहाँ इन पानियों में नहलाने की फिर से कोशिश करें। ❑

बेनाम रिश्ते

शायद हम इन रिश्तों को नाम देकर
रिश्तों की तौहीन कर रहे हैं
रहने भी दीजिए ऐसे ही
इन रिश्तों को बिना कोई नाम देकर
तुम भी चुप हो और मैं भी ख़ामोश हूँ
बेशक हम दोनों की आँखें बोलती हैं
पर हमारे जज़्बात भटकते हैं
बिखरते हैं
सूरज के 'अलाव' में जल जाते हैं
अब तुम कुछ कहो तो
शायद जुल्म की ये रात ढल जाए
मेरे कच्चे मकान की छत पर
चाँदनी लटक जाए
ताकि हम तुम इन रिश्तों को कोई नाम दे सकें। ❑

जीने के लिए

मीलों के फ़ासले अक्सर बिखर गए
दौरान-ए-सफ़र ज़िन्दगी सिमट गई
मंज़िल तक पहुँचने के लिए
साहस तो करना ही पड़ेगा
हर वक़्त के हर लम्हें को थामना पड़ेगा
बेज़ुबाँ परिन्दों को
कफ़स में कैद तो करना ही पड़ेगा
और ज़िन्दगी अगर संघर्ष है तो
संघर्ष तो करना ही पड़ेगा
इसके बावजूद सब को सब कुछ मिले
ये ज़रूरी तो नहीं! ❑

तुम्हारा एहसास

जब-जब मौसम बदलते हैं
तुम, हमारे आसमानों में ज़ाहिर होने लगते हो
कभी चाँद बनकर
तो कभी बादल बनकर
कभी-कभी हमारे हिस्से की धूप तुम चुरा लेते हो
और कभी हमें रोशनी से नवाज़ते हो
हमारी दुनिया में शामिल हो जाते हो
मेरा दर्द बनकर
और फिर गुम हो जाते अक्सर हवाओं की तरह
इतनी बे-रुख़ी क्यों
तुम्हें पाना अब अगर मुमकिन नहीं
पर इन बदलते मौसमों में
तुम्हारा एहसास जाने क्यों
इस बात की तरजुमानी करता है
कि तुम हो मेरे साथ
यहीं कहीं मेरे पास। ❑

मुंतज़िर हवाएँ

इस शब की ख़ामोशी को
क्या तुम महसूस करते हो
इन सन्नाटों को चीरती तुम्हारी सिसकियाँ
हमारे वजूद को दस्तक देती हैं
हमें माज़ी के शबिस्तानों से रू-ब-रू करती हैं
तुम्हारे दिए हुए ज़ख़्मों को
हरा करने की कोशिश करती हैं
बेशक क्यों न मौसम बदलते रहें
पर आज भी बेताब हैं ये चिनार के पत्ते
तुम्हारे पैरों को छूने के लिए
यहाँ की यह मासूम हवायें मुंतिज़र हैं
तुम्हारे बदन से लिपटने के लिये
क्योंकि तुम हमारी इस ख़ामोश शब के
हर पैहर में ज़िन्दा हो
जावेदाँ हो! ❑

एक फ़रियाद

फिर आज बसन्त के इस मौसम में
मैं तुम्हें इन पागल हवाओं की सनसनाहट में
महसूस कर रहा हूँ
तुम तो शायद अब लुप्त हो गए हो
फ़ना हो गए हो
फिर क्यों मुझे तुम्हारी आवाज़ का एहसास
इन सरफिरी फिज़ाओं घटाओं में हो रहा है
क्या तुम फिर से लौट आओगे मेरी दुनिया में
मेरे उजड़े वजूद को हरा-भरा करने के लिए
क्योंकि अब भी 'मैं' तन्हा हूँ विरान हूँ
इस शिकस्ता-ए-दिल में
हमेशा एक फरियाद रहती है
कि तुम मेरी दुनिया में
बसन्त के मौसम की तरह फिर से चले आते
ताकि हम दोनों
दूर तक देर तक साथ-साथ चलते
पास-पास चलते
फ़िसलते-सम्भलते और फिर चलते
एक अनजाने सफ़र की ओर! ❑

ख़ुदाओं का ख़ुदा

मैं ढूँढ़ता हूँ खोये हुए ग़म को
इक उदासी को
उस बेचैन ज़िन्दगी को
हर जुज़ तड़प है
जिसकी हर साँस मौत है
वो बदमस्तो-ख़राब पागल सा
सड़कों पर फिरता आवारा सा
वो बेरुख़ी जिसमें मोहब्बतों की तोहीन की बदबू है
वह तक़ल्लुम जो उगलता ज़हर है
वो परछाई जो रेंगते साये तनहाई के
वो सोहबतें जो गुम है तहजीब से
वह खुदाओं का खुदा जो आज है मुझसे जुदा! ❑

क्या तुम्हें याद है

शायद ये हैं रिश्ते जन्म-जन्म के
जो तुझे इन फिज़ाओं, घटाओं
इस कायनात के ज़र्रे-ज़र्रे में
मैं महसूस करता आ रहा हूँ
क्या तुम्हें याद है
इन पीले पत्तों को
तुम अपने आँचल में छुपाया करते थे
और यहाँ बर्फ़ की चादर पर
तुम अपने कदमों के निशान छोड़ जाया करते थे
तुम यहाँ शाम की तन्हाइयों में
मौसम-ए-ख़िज़ाँ को
मोहब्बतों का लिबास पहनाया करते थे
और एक नई सुनहरी सुबह
आप के दामन को
छू कर गुज़र जाया करती थी! ❑

डूबते अक्स

देखा है हमने
इन पंक्तियों में अपने अक्स को डूबते हुए
और देखा है हमने इन साहिलों की बेरुख़ी को
इन प्यासी मौजों को
इन किनारों की नाराज़गी को
धारायें बहा लेती हैं मन की भावनाओं को
भटकते मन की दिशाएँ बदल देती हैं
और छोड़ जाते हैं हम
अपने अतीत को तशनगी को
इन खाली सहराओं में
शायद यह सोच कर कि
इन पानियों में डूबते अक्स को मैं ढूँढ़ सकूँ,
उसे पहचान सकूँ! ❑

ऐसे मौसम में

ऐसे ही मौसम होते हैं
दिल के क़रीब
जो गुज़रे दौर के दर्द को सम्भालते हैं
हाँ, तुमने अपने आँचल में छिपाया है
मेरी हर परेशानी को
जब-जब मैंने माज़ी के अवराक़ उलटाए
तुम्हें दिलासा देते हुए मैंने पाया है
पाया है मैंने तुम्हें
जहाँ के ज़र्रे-ज़र्रे में
ख़ुशी हो या ग़म
तुम साथ-साथ हो
कभी मेरी परछाई बन कर
तो कभी मेरी धड़कन बन कर
बेशक रूह जिस्म से अलग होती है
पर मेरे ख़्वाबों की तुम ताबीर हो
जब-जब ऐसे ही मौसम होते हैं
तब-तब तुम मेरे दिल के करीब होते हो! ❑

साये की तलाश

इस जलती धूप में
मैं क्यों घूम रहा हूँ
अपने ही साये की तलाश में
ये पथरीले रास्ते आज क्यों मायूस हैं
शायद मेरा महबूब उदास है
और मुझे अपनी यादों में शामिल किया है
एक तवील अर्से के बाद
आज इन हवाओं में पहले जैसी ताज़गी क्यों नहीं
ये भटके परिंदे अपनी उड़ान तो भरते हैं
पर उन्हें अपनी मंज़िल का पता नहीं
मुसाफिर तो निकल पड़ते हैं
अपने लक्ष्य की जानिब
यह सोच कर कि
शायद ये पागल हवायें
उनका रास्ता न रोकें
पर यह सिरफिरा मौसम
ज़रूर अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करता है। ❑

अतीत का मौसम

आज यादें अपने अतीत की
आने वाले कल को दर्शाती हैं
वो कल
जिसमें हमारा बचपन
किसी का मोहताज नहीं हुआ करता था
हम बादलों को अपनी मुट्ठी में कैद कर लेते थे
पानियों की गहराइयों को नाप लेते थे
अपने वजूद में झाँकने की कोशिश भी करते थे
बर्फ़ को पिघलने से रोक लेते थे
अंधेरी रातों में
आसमान की बुलंदियों को
टिक-टिकी बाँध
अपने हसीन सपनों की बुनियाद को
मज़बूत किया करते थे
यह वो दौर था
जब हमारी मासूमियत पर
हर कोई फिदा हुआ करता था
और हम हवाओं की सनसनाहट के साथ
सुर मिलाया करते थे। ❑

तेरे दिल में

रहना है तेरे दिल में
तेरी आरज़ू बन कर
तेरी इबादत बनकर
हम पूजते रहे ख़ामोश पत्थरों को
विरानियों को, बे-सहारा सायों को
और ढलती शामों को
क्योंकि रहना है तेरे दिल में
तेरी ख़्वाइश बन कर
तेरी हसरत बन कर
तेरी इबादत बन कर
मगर मेरे आँगन की धूप
मुझ पर कभी मेहरबान न रही
अब जबकि रहना है तेरे दिल में
शायद तेरा मुकद्दर बन कर
तेरी जुबा बनकर तेरी आबरू बनकर
फिर क्यों न बीते मौसम की तपिश को
अलविदा करें
और रहें तेरे दिल में
तेरी धड़कन बन कर। ❑

दुआएँ

काश! हम चाँद को नहला सकते
सितारों की ख़ामोशी तोड़ सकते
बुझे चिराग़ फिर से रौशन कर सकते
अपने बीते मौसम के हर पल को
इस क़द-ए-आदम आईने में महसूस कर सकते
तुम्हें दुनिया के
हर सितम से दूर रख सकते
और तुम्हारी मुश्किलों में
तुम्हारे टेढ़े-मेढ़े रास्तों को
खुशनुमाँ बना सकते
काश! तुम्हारी इन अंधेरी राहों को
हम रौशन कर सकते
और सलामती के लिए
तुम्हारी दुआओं में उठते हमारे भी हाथ -
मिलन बिछड़न की रीत
सदियों से चली आई है
आँखों से ओझल होकर
नहीं दिल से जुदाई है। ❑

ख़ुशबुओं के मेले

मुस्कुराती सुबह
परिन्दे अपनी परवाज़ लिए
आसमान की बुलन्दियों को छूने की कोशिश में मगन
मदमस्त हवाओं का झुरमट
जहाँ तक नज़र दौड़ाओ
उम्मीदों के सागर उमड़ आए हैं
लहरें इन ख़ामोश साहिलों को छूने को बेक़रार हैं
यहाँ ख़ुशबुओं के मेले लगे हैं
उदासी आज कहीं गुम हो गई है
तेरी उँगली पकड़ कर
मैं क्यों न तुम्हें इन्द्रलोक की सैर करवाऊँ
जहाँ शायद अप्सराएँ तुम्हारी इबादत करें
तुम्हारे बदन से लिपट जाएँ
और फरिश्ते दुआओं में अपने हाथ उठाएँ
ताकि एक नई सुबह की शुरूआत हो सके। ❑

इज़हार

नई आशाओं और उमंगों के साथ
हम अपनी परवाज़ लिए
हम आप के दिलों को
छूने की जुर्रत तो ज़रूर करेंगे
पर धीरे-धीरे
अपनी मोहब्बत का इज़हार भी
करने की कोशिश करेंगे
क्योंकि दिलों में बसती हैं धड़कनें
और धड़कनें आप की याद दिलाती हैं
एक सवाल मन में हमेशा पनाह लेता है
क्या सनम बेवफा होते हैं?
अरे-अरे... तुम्हारे दाँतों-तले उँगली दबाना
मैंने पूछा क्या सनम होते हैं बेवफा! ❑

कोशिश

रिश्तों के इस मौसम में
कुछ अनकहे सवालात
कुछ अनसुनी बातें रह गईं पीछे
शायद यह सोच कर
कि हम हद-ए-परवाज़ को छूने की
नाकाम कोशिश करते रहे
करते रहे अपनी तमन्नाओं
अपनी आरज़ुओं का
बेसब्री से इन्तज़ार
बुलन्दियों में अपनी परवाज़ लिये
अपने आसमान को तलाशने की
कोशिश करते रहे। ❑

परछाइयों का कारवाँ

एक शब ऐसी भी थी जब
घुप्प अंधेरों में मैं
अनजानी परछाइयों के हम-राह
अपने मुकद्दर को संवारने की
ज़रूरत महसूस करने लगा
और तलाशने लगा अपने वजूद को
अपने अतीत को
अपने माज़ी को
मेरे ख़्वाबों में बसी हैं
तुम्हारे हर पल की करवटें
और तुम्हारे फुर्क़त में बहे आँसू
मैंने सम्भाल के रखे हैं अपनी पलकों में
शब-ए-हिजर क़यामत ढाती है
जब तुम याद आते हो
परछाइयों के इस कारवां में
बेबसी के मनाज़िर सिर्फ़ पीड़ा देते हैं
दर्द के सरूसार करते हैं। ❑

कदमों के निशां

इन सरहदों पर
तुम्हारे क़दमों के निशाँ अभी भी मौजूद हैं
रात में जब ये चाँद निकलता है
तुम्हारी परछाई इन रेतिली टीलों
मैं मेहसूस करता हूँ
ये नदी जब उछलती है
मैं तुम्हें इन मौजों में देखता हूँ
पतझड़ में ये किनारे जब खुशक हो जाते हैं
मुझे तुम्हारे दर्द का अहसास होता है
जब ये बहता पानी रुकता है
तुम्हारी नशम नम हो जाती है
मैं ये भी जानता हूँ परछाइयों के इस सफ़र में
तुम अब कितनी दूर चली गई हो
मुझे इस बात का भी अंदाज़ा है
पर इस सफ़र के दौरान
मैं तुम्हारे आँसू रोक ना सका
इसलिए शायद इन सरहदों पर
तुम्हारे क़दमों के निशां अभी भी मौजूद हैं- ❑

आगाज़

हम तो मुसाफ़िर है
मंजिल की तलाश में भटकते हैं
जानते हैं रास्ते दुशवार हैं
कठिन हैं राहें
फिर भी सफ़र है जारी
पीड़ाओं के सहरा में
कितनी ज़िन्दगियाँ भटकती हैं
समझना बड़ा-मुशकिल है
पर समय की रफ़तार के साथ
शायद इस भटके हुए मुसाफिर की तलाश खत्म हो
ताकि एक नई सुबह का आग़ाज हो सके... ❑

ढूँढ़ता हूँ उसे

कभी-कभी हमारी कुछ तहरीरें और तस्वीरें
माज़ी की यादों को
फिर से तर-ओ-ताज़ा करने में
इस कद्र मददगार साबित होती हैं
कि हम अपने आने वाले कल के
सपनों को साकार कर सकते हैं
अपने सुनहरे भविष्य की हथेली के आईने में का
आग़ाज़ भी कर सकते हैं
जो छूट गया / वो हमारी नादानी थी
और अब जो सामने है
वो ही हमारा सच्च है
शायद यही सोच कर
हर कोई अपनी मुश्किलों का
उजाला करने में छुट जाता है
और यह कहता है
कि तेरी परछाई से तामीर करूँ ताजमहल
आसमां से चाँद चुरा लूँ
और तुम्हारे घर के एक कोने में रख दूँ-
"ढूँढ़ती हैं तुम्हें मेरी परछाइयाँ
ऐ खोई हुई मेरी ज़िन्दगी तू है कहाँ!" ❑

सरहदों के पार

बन्द आँखों के ख़्वाबों की सरहदें नहीं होतीं
रोज़ चला जाता हूँ मैं उस पार अपने महबूब से मिलने
उस पार दूर तक
जहाँ चाँद और सूरज का मिलन होता है
बातें करता हूँ शाम देर तक
बातें करता हूँ अपने महबूब से
पुष्पहार पहनाता हूँ
फूलों की बारिश / मौसम-ए-खिजाँ
अक्सर मेरे गीतों की गुनगुनाहट को
अभी भी तुम्हारी फितरत में शामिल रखे हैं
अपने यार को मीना बाज़ार की सैर भी कराता हूँ
तुम्हारी नाजुक कलाइयों में कँगन पहनाता हूँ
और इन बादामी आँखों में कजरा लगाता हूँ
बन्द आँखों के ख़्वाबों की सरहदें नहीं होतीं
रोज़ चला जाता हूँ उस पार अपने यार से मिलने
तुम हुस्न की हो मिसाल
हो पूनम का चाँद
ज़िन्दगियों की हो सहर
हो ढलती शामों की मख़मली नींद। ❑

कुछ कहो

इन बर्फीली घाटियों में
एक ज़िन्दगी ख़ामोश है।
यहाँ लम्हें चुप हैं
पर रातें हैं... शादाब सन्नाटा पसरा है
घुप्प अंधेरे भी यहाँ बोलते हैं
तुम भी कुछ बात करो
कुछ कहो
तोड़ दो अपनी चुप्पी, अपनी उदासी को
आज यहाँ इन बर्फीली हवाओं में
पत्थर भी पिघलते हैं
यहां मेरे सब्र का पैमाना भी
अब टूटा जा रहा है
कुछ कहो
... तुम भी कुछ बात करो। ❑

उस जहां में

परियाँ फैलाती हैं मन का आँचल
भर देती हैं ख़ुशियों से दामन
अपने साथ कहीं दूर तक ले जाती हैं
गगन के उस पार
अपनी मुस्कुराती दुनिया में
जहाँ फरिश्ते राहों में सजदा करते हैं
जहाँ यका-यक फूलों की बारिश होती है
जहाँ चाँद सितारे
हमारे पाँव छूने में गुरेज़ नहीं करते हैं
जहाँ रूह रक़्स करती है
और जिस्म प्यार का इज़हार। ❑

नीले पानियों में

नीले पानियों की गहराई में
यह तुम्हारा चेहरा आज धुंधला क्यों नज़र आता है
क्या तुम अब लुप्त होना चाहते हो
या अपनी परेशानी बयान नहीं करना चाहते हो
तुम्हारे वजूद में आने से
रिश्तों की बारीकियों को समझने में
आसानी ज़रूर होती
ग़र ये रिश्ते अपनी मंज़िल हासिल करते
कभी-कभी जज़्बात में आकर
क्यों हम एक-दूसरे पर भरोसा करते हैं
और खोजते हैं नए रिश्ते
यह जान कर भी
कि इन रिश्तों की बुनियाद मज़बूत नहीं है
शायद यही वजह है
कि इन नीले पानियों की गहराई में
वो चेहरा धुंधला नज़र आता है
जो कभी चाँद जैसा चमकता रहा। ❑

सरहदों के आर-पार

सरहद के 'उस पार'
आकाश में अपनी उड़ान भरते थे पंछी
मीलों सफर तय कर थकहार कर
जब सुस्ताने लगते हैं
तो इन्हें यह मालूम नहीं होता है
कि हमने किस की ज़मीन पर क़दम रखा
क्या ये सरहदें सिर्फ़ इन्सानों के लिए बनी हुई हैं
हम अपनी ज़मीनों का बँटवारा ज़रूर कर सकते हैं
पर मोहब्बत की सरहदों पर खीचीं लकीरें
हमारे लिए बे-मायने हैं
प्यार की कोई सरहद नहीं
कोई मज़हब नहीं
बादल बरसते वक़्त
हवा चलते हुए
खुशबू का एहसास
पाक-ओ-पवित्र मोहब्बत का एहसास
किसी सरहद को नहीं मानते.... ❑

गुमनाम सफ़र

परछाइयों के इस सफ़र में
हमारे अपने साये आज गुम हैं
और अब
मील के पत्थर नज़रों से भी ओझल होने लगे हैं
शायद बदल रही है
क़ायनात की हर वो तख़लीक
जो कभी इन नंगी दीवारों पर चस्पां हुआ करती थी
और इन पत्थरों को
गिरने से रोक लेती थी अपनी मदहोशी में
कई बार अपनी ही परछाई को रौंदने की
नाकाम कोशिश भी की होगी
ताकि मंज़िल का पता तो चले
और ये गुमनाम सफ़र
पा-ए-तक़मील तक पहुँचा जाए
बिना किसी सहारे के... किसी खौफ के...
अधूरा ख़्वाब
रक़्स करती बर्फीली सर्द हवाएं
ज़मीन पर बिछी हैं सफेद चादर
और खुले आकाश में टिमटिमाते हैं सितारे

यह रात है पूनम की
फ़िसलते-फ़िसलते दोनों एक दूसरे का हाथ थामे
ये कहाँ आ गए हैं हम-
फिर क्या इस रात की सुबह होगी
क्या हमें हमारी मंज़िल मिलेगी
क्या ये सितारे हमारी मोहब्बत की गवाही देंगे
क्या यह पूनम का चाँद
हमारी ज़िन्दगियों को रौशन करेगा
क्या हमारे ख़्वाबों की ताबीर होगी
क्या विरानी के ये पत्थर हमारे लिए
मील पत्थर साबित होंगे
या यूँ ही माज़ी के शबिस्तानों में
ज़िन्दगी के बचे पल गुज़र जाएंगे
एक अधूरा ख़्वाब लिए। ❑

कुछ तुम कहो - कुछ हम कहें

आज इन बरसातों में
दिलों ने फिर याद किया
उन्हें जो कभी दिल के बहुत क़रीब थे
शायद अपनी धड़कनों से भी क़रीब
वो जिसने मोहब्बतों का लिबास पहनाया
वो जिसने इन फ़िज़ाओं में गुनगुनाना सिखाया
अक्सर उनकी आवाज़
मैं इन बरसातों में हमेशा सुनता आ रहा हूँ
उनके कदमों की आहटें
मैं हमेशा महसूस करता था
शायद शब्दों में बयान करना मुमकिन नहीं
अगर मुमकिन है तो सिर्फ़ उन बीती यादों को
फिर से ताज़ा करना
जो मेरे तुम्हारे जीवन से जुड़ी हुई हैं
क्यों न हम दोनों एक दूसरे के ख़यालों में
थोड़ी देर के लिए डूब जाएं
कुछ तुम कहो... कुछ हम कहें... ❑

अधूरे ख़त

मेरे महबूब
ये आख़िरी ख़त मेरा अधूरा रहा
क्योंकि अब मैं शिद्दत से
अलफाज़ की कमी महसूस करता हूँ
कारवाँ गुज़रते-गुज़रते
मैंने जब जब भी लिखा
तेरे नाम लिखा
बे-हिसाब लिखा
बे-खुदी में लिखा
और पुरअसर लिखा
और मोहब्बत में लिखा
अपने जज़्बात को
अलफाज़ की सूरत में
ख़त के ज़रिए ज़ाहिर किए
शुक्रगुज़ारी के मोहताज रहते हैं
जब सुनते हैं तुमने मेरे ख़त सम्भाल के रखे हैं
और अक्सर फुर्सत में इनका मुताला भी करते हैं
अपने अधूरे ख़त को
मुकम्मल करने की कोशिश करूँगा
फिलहाल बस यही कहना चाहूँगा! ❑

माज़ी के रिश्ते

पिछली शब घुप्प अंधेरे में एक आहट सुनाई देती है
धुंधली तस्वीर का एहसास भी होता है
पर नज़रों से ओझल हो जाती है
ज़रूर यह वहम है मेरा
क्योंकि माज़ी के रिश्ते कहीं खो गए हैं
ये रिश्ते पलभर में क्यों मिटते हैं
क्यों हम उन रिश्तों को भूल जाते हैं
जिन से हम अपने आने वाले कल
की शुरूआत करते हैं
क्या वाकई हम रिश्तों की बारीकियों को
समझने में नाकाम रहते हैं! ❑

पिछले मौसम में

यहाँ आज कल यहाँ
रूहों में बेचैनी है, बे-करारी है
तड़प है, एक उलझन है
एक वो भी दौर था
जब हमारे जिस्म अलग-अलग थे
पर हमारी रूहें एक थीं
हमारी धड़कनें साथ-साथ धड़कती थीं
अक्सर हमारी परछाइयों का मिलाप हुआ करता था
तुम्हारी घनी ज़ुल्फों से हवा खेला करती थी
काजल तुम्हारी आँखों में
बहुत देर तक ठहरता था
मेहन्दी भरे पाँवों में पायल और चूड़ियों की ख़नक
तुम्हारे मौजूद होने का एहसास क़राती थी
वो तेरा लहराता हुआ नीले रंग का दुपट्टा
और मेरी आँखों का रिमझिम सावन
आज भी मुझे
पिछले मौसम की याद दिलाता है
जब तम कच्ची पगडण्डियों में भीगा करती थी
और मैं तुम्हारी इन मासूम अदाओं को
देर तक निहारता रहता था! ❑

मेरे महबूब

मेरे महबूब
आज मैं अपनी ही महफ़िल में
अकेलापन महसूस कर रहा हूँ
मेरे इस घर के दर-ओ-दीवार
ख़ामोशी का लिबास पहने हुए हैं
अब चाहतें शायद चुप हैं
यह मौसम ग़मज़दा है
दरियाओं की रवानी थम चुकी है
क्यों? इन साहिलों को पानी छूने से कतरा रहा है
मेरे महबूब
तुम्हारे बगैर यह मेरी तहरीरें बे-असर हैं
मेरी नज़्में मेरे नग़मे मेरे गीत बे-मायने हैं
मेरे महबूब मैं यह भी जानता हूँ
कि तुम्हारा ताल्लुक अब हमारी दुनिया से नहीं है
तुम आसमानों के दायरे में दाख़िल हो चुके हो
पर क्या तुम
हमारा ख़याल बन कर
हमारी दुनिया में
एक बार दस्तक नहीं दे सकते हो? ❑

कभी यूँ भी तो हो

कभी यूँ भी तो हो
परियों की महफ़िल हो
मौसम हो बरसात का
और तुम आओ

कभी यूँ भी तो हो
ये नर्म-मुलायम हवाएँ
तुम्हें छू कर गुज़रें
और तुम आओ
मेरी भूली बिसरी यादों में
तुम शामिल हो

कभी यूँ भी तो हो
मेरे जज्बात अहसासात
का उन्वान बन पाते

कभी यूँ भी तो हो
तुम शामिल रहते
मेरी रूह में

इन घटाओं में
मेरे हर मौसम में
पिछले मौसम की तरह

कभी यूँ भी तो हो
तुम जो आते
मेरा मकान घर बन जाता
और दीवारें बोलने लगतीं

कभी यूँ भी तो हो
तुम शामिल होते
मेरे ख़्वाबों में
मेरी करवटों की तरह
कभी यूँ भी तो हो! ❑

❑❑❑

रिश्तों की ख़ुशबू

और मैं चलता रहा
उस मोड़ तक
जहाँ तुम मुझे तन्हा छोड़ आए थे
ग़रचे यह सफ़र आज भी मुझे
मेरे हर उस बीते लम्हे को
भुलाने का हौसला देता है
मगर तुम्हारी मासूम बेबस
अदाओं का अहसास
कैसे भुला पाऊँगा
जबकि हमारे रिश्ते
अब पिंजरों में क़ैद हैं
फिर भी उन रिश्तों की खुशबू
हमारे दरम्यां के फ़ासलों को
कम करने में
हमेशा मदद करती रही है।

(पुस्तक की एक कविता)

रमेश मराठा

जन्म : 25 फरवरी

सम्प्रति : ऑल इण्डिया रेडियो, कठुआ (जम्मू-कश्मीर) में वरिष्ठ उद्घोषक।

सम्पर्क : वरिष्ठ उद्घोषक
आकाशवाणी कठुआ
(जम्मू-कश्मीर)

मोबाइल : 9419245577

अयन प्रकाशन

साहित्य संस्कार के तीन दशक